

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याओं के विभिन्न पक्ष

प्रो. जाहिदा जबीन

एवं

डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट

मानव समाज चाहे सभ्य समाज हो या असभ्य, शिक्षित हो या अशिक्षित अथवा विकसित समाज हो या विकासशील समाज, उसमें कोई-न-कोई समस्या सदैव विद्यमान रही है। जिन अवांछनीय एवं अनुचित व्यवहारों से सामाजिक व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है उन्हें समस्या कहा जाता है और सामाजिक संगठन, सामाजिक संरचना या मानवीय संबंधों में जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं उन्हें सामाजिक समस्याएँ कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जिन समस्याओं को समाज के अधिकांश सदस्य सामाजिक आदर्शों, मूल्यों, प्रथाओं आदि के लिए खतरनाक मानते हों वही समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ कहलाती हैं। सामाजिक समस्याएँ सदैव विघटनमूलक होती हैं। इनसे समाज में बिखराव एवं तनाव उत्पन्न हो सकता है तथा नियमित एवं सामान्य जीवन बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। भारतीय समाज में प्रचलित अनेक प्रथाओं एवं परम्पराओं ने विभिन्न सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। जैसे ज़मींदारों द्वारा कृषकों पर हुए शोषण से निर्धनता का जन्म हुआ तथा धर्म के नाम पर उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किए गए अत्याचारों से जातिवाद की समस्या का जन्म हुआ। इन समस्याओं को वर्तमान में प्राचीन समाज की तरह ईश्वर की इच्छा न मानकर एक सामाजिक समस्या के रूप में माना जाता है। अतः 'वे सभी परिस्थितियाँ सामाजिक समस्याएँ हैं जो समाज में सामंजस्य, एकता व सुदृढ़ता को चुनौती प्रदान करें एवं जिनमें यह भय उत्पन्न हो जाए कि ये परिस्थितियाँ यदि ठीक समय पर नियंत्रित नहीं की जा सकीं तो ये सामाजिक व सांस्कृतिक आदर्शों-मूल्यों को ही समाप्त कर देंगी।'¹

नारी हमारे समाज में सबसे अधिक पीड़ित एवं प्रताड़ित की जाती है जिससे समाज में नारी शोषण जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से हमारा ध्यान इनकी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। जिनमें अमृतलाल नागर का नाम सर्वश्रेष्ठ आता है। अमृतलाल नागर ने लगभग अपने सभी उपन्यासों में नारी शोषण का चित्रण किया है यद्यपि हर उपन्यास में नारी की स्थिति और उसकी समस्या बदलती रहती है तथापि उसकी वास्तविक पीड़ा प्रत्येक उपन्यास में सामान ही रहती है। वर्तमान समाज में भी नारी की स्थिति दयनीय ही है। पुरुष का नारी के प्रति यही दृष्टिकोण रहा है कि नारी उसकी संपत्ति है और इस संपत्ति का इच्छानुसार उपयोग करना पुरुष का जन्मसिद्ध अधिकार है। अमृतलाल नागर के 'भूख' उपन्यास में शीबू नामक पात्र है जो स्त्री को केवल अपनी संपत्ति समझता है। उसका

कहना है, “पत्नी पति की मिल्कियत है और इसीलिए कुदरतन उसे सर्वाधिकार प्राप्त है। बच्चा अपने खिलौने को जैसे जी चाहे खेले, उसे तोड़ भी डाले- इसमें खिलौने को शिकायत क्यों हो।”²

अमृतलाल नागर के ‘भूख’ उपन्यास की सम्पूर्ण कहानी भूख से छटपटाती आम जनता की कथा तो है ही साथ ही इसमें नारी की विवशताओं के चित्र भी देखने को मिलते हैं। इस उपन्यास में चित्रित समाज में नारी के प्रति हुए अत्याचारों का स्पष्ट रूप में चित्रण हुआ है। अकाल के कारण कई स्त्रियों को वेश्या बनना पड़ता है, उनको अपनी इज्जत से हाथ धोना पड़ाता है। धन के मोह में नुरुद्दीन अपने साथियों के साथ मिलकर भूखी और लाचार स्त्रियों का व्यापार करते हैं। “दो मुट्टी चावल के लिए औरतें बेचीं जाने लगीं। बुद्धियों को धर्मशाला में दीन- धर्म के उपदेश सुनने के लिए भरती नहीं किया जाता था। धर्मशाला का रहस्य मालूम हो गया। पर औरतों की अस्मत् जाय तो जाय-खाने को मिले। बहु-बेटियों को वेश्या बनने दो। आबरू जाती है तो जाने दो। पेट से बढ़कर दुनिया में कोई चीज़ नहीं। बेचो ! बेचो !”³ इस धंधे में मुनाफा देखकर अजीम नाम का एक अन्य पात्र भी नुरुद्दीन के साथ ये धंधा करने के लिए तरस जाता है। वह नुरुद्दीन की ठोड़ी पकड़कर कहता है- “चार रुपै औरत पर तै करो उस्तादा दो तुम्हारे, दो हमारे। हम रुपै के बजाय चावल देंगे, ग्राहक चावल देखकर फ़ौरन जाल में आएगा। और रुपै तुम चाहे लाख दिखाओ, कोई तुम्हें पूछेगा भी नहीं।”⁴

इस उपन्यास में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति सामान थी। थोड़े से चावल के लिए स्त्रियों को एक मालिक से दूसरे मालिक के हाथों बिकना पड़ता है। शीबू की बहन तुलसी भी भूख से बचने के लिए नुरुद्दीन के हाथों ही बिकना पसंद करती है। इस उपन्यास में केवल तुलसी ही नहीं अपितु सभी मध्यवर्गीय परिवारों की बेटियाँ इसी तरह बिकने के लिए विवश हो जाती हैं। उदाहरण- “आबरू नाम की कोई चीज़ इस वक्त तक उनके साथ नहीं रह गई थी। उनकी बहु-बेटियाँ भी खुले आम धर्मशालाओं और अनाथालयों में भेची जाने लगी थी।”⁵ इस उपन्यास का नायक ‘पांचू गोपाल’ स्त्रियों की दयनीय दशा को देखकर कहता है- “उन्हें भी कहने का हक़ है, उन्हें भी जीने का हक़ है। पुरुष इस हद तक स्त्री को अपनी दासी बनाकर नहीं दबा सकता।”⁶ आगे वह कहता है- “हमें सबका समान अधिकार स्वीकार करना ही होगा। जब तक एक भी स्त्री दासी रहेगी, उसके पेट से दास ही उत्पन्न होंगे। दासता जीवन को मृत्यु की जड़ता से बांध देती है। यह अकाल हमारी दासता का परिणाम है। यह अकाल मनुष्य की दासता का परिणाम है।”⁷

उपन्यासकार अमृतलाल नागर ने अपने एक अन्य उपन्यास ‘बूंद और समुद्र’ में भी नारी शोषण का चित्रण किया है। इस उपन्यास में नारी की सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता एवं नारी-पुरुष के समान अधिकारों का प्रश्न उठाया गया है। इस उपन्यास की पात्र ‘वनकन्या’ समाज में स्त्री-पुरुष की समानता एवं स्त्री की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करती है। वह उन सब नैतिक मूल्यों और सामाजिक धारणाओं का विरोध करती है जो नारी के

उज्ज्वल भविष्य में बाधक बनते हैं। उसका कहना है- “हमें अब झूठे धर्म का भय, और झूठी आबरू का मायाजाल तोड़ कर कहना भी होगा, और लड़ना भी होगा।”⁸ उपन्यासकार ने आर्थिक पराधीनता को नारी समस्या का मुख्य कारण माना है, क्योंकि जब तक नारी आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहेगी तब तक उसे पुरुष द्वारा दी गई यातनाएँ सहनी पड़ेगी। आर्थिक पराधीनता के कारण आज के मध्यवर्गीय समाज में नारी कहीं आत्महत्या करने पर विवश होती है तो कहीं मानसिक क्लेश सहने को मजबूर होती है। ‘वनकन्य’ के अनुसार- “स्त्री और पुरुष आमतौर पर एक दूसरे की इज्जत नहीं करते हैं। स्त्री आमतौर पर आर्थिक दृष्टि से पुरुष की आश्रिता है, उसका व्यक्तित्व स्वतंत्र नहीं। इस देश की स्त्रियाँ सदा से यह दुःख भार उठाती आई हैं। सीता को भी सहना पड़ा था, द्रौपदी को भी।”⁹ वर्तमान समाज में नारी पर हुए अत्याचारों एवं शोषण को देखते हुए उपन्यासकार स्वयं कहते हैं- “नारी होना आज की सामाजिक स्थिति में अभिशाप है।”¹⁰

‘बूंद और समुद्र’ उपन्यास द्वारा महिलाओं के लिए विभिन्न प्रकार के संगठनों तथा धर्मशालाओं में हो रहे व्यभिचार तथा नारी शोषण को दिखाया गया है। कथाकार नागरजी लिखते हैं- “महिला-सेवा-मंडल के भवन के अन्दर मंत्री, कार्यकारिणी के सदस्यों, अनेक मित्रों और पुलिसवालों के मनोरंजन के लिए व्यभिचार का अड्डा चलता है।”¹¹ इस मंडल में निम्नवर्ग की महिलाओं, तथा भटकी हुई स्त्रियों को बहका-फुसला कर रखा जाता है। मंडल में हो रहे स्त्रियों का शोषण तथा प्रताड़ना का लेखक ने मर्मभेदक चित्रण दिया है- वह पुरुषमात्र से त्रस्त है, पुरुषमात्र से घृणा करती है। उसने पीछे दो वर्षों में पुरुषों के द्वारा जितने मानसिक आघात पाए और सहे वे उसे घृणामयी बनाने ओ बाध्य करते हैं। उसका पवित्र निष्कपट मानस पुरुष के कपट-जाल में फँसकर तरह-तरह के अपमान और बलात्कार सहकर अस्त-व्यस्त हो चला है।”¹² महिला-सेवा-मंडल में इस प्रकार के दुराचार तथा व्यभिचार को देखकर वनकन्य इसका विरोध करती है। वह कहती हैं- “ इस दुराचार का अंत करना ही होगा। इसी समय पुलिस में रिपोर्ट कर इस अड्डे को पकड़ना चाहिए।”¹³ आगे वह सज्जन से कहती है “तुम अभी जाओ ! कुछ भी करो- इस पाप का अंत करो।”¹⁴

हमारे समाज में नारी हर समय व्यवस्था की रूढ़ियों का शिकार होती रहती है। उसके प्रति अत्याचार एवं दुराचार हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। वर्तमान समाज में नारी की स्थिति पर इसी उपन्यास का एक अन्य पात्र महिपाल कहता है- “मौजूदा समाज में नारी की एक अजीब सामाजिक स्थिति है। खासतौर से हमारे देश में तो यह विचित्रता और भी स्पष्ट होकर झलकती है। हम देखते हैं कि औरत इस समय आम घरों में, किसी न किसी रूप में बेइज्जती का जीवन बिताती हैं। छोटे आदमी कहलाने वाले को कौन कहे, बड़े-बड़े सभ्य रईसों और पंडितों के घरों में भी स्त्री-जाति का दमन होता है, तरह-तरह से उनका अपमान होता है। आम-

जहनियत में स्त्री घर का काम-काज, सबकी सेवा टहल करने वाली और पुरुष के भोग की वस्तु होने के अलावा और कुछ भी नहीं।”¹⁵

‘नाच्यौ बहुत गोपाल’ उपन्यास में भी नागर जी ने नारी शोषण का चित्रण किया है। इस उपन्यास में विभिन्न स्थलों पर विभिन्न पात्रों द्वारा नारी की सामाजिक स्थिति को उद्घाटित किया गया है। उपन्यास की नायिका ‘निर्गुनिया’ के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है। नारी जीवन की विडम्बनाओं के संबंध में निर्गुनिया कहती है- “बाबूजी, मैं पक्ष लेकर बात नहीं करती, पर यह सच है कि दुनिया में दूर-दूर देशों तक, औरतों से बढ़कर और कोई भी ज़्यादा गुलाम नहीं है। मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा। मरद सब जगह एक है।”¹⁶

वर्तमान समाज में भी अधिकतर पुरुष नारी को केवल भोग की वस्तु ही समझता है। वह चाहे कितनी ही प्रगति क्यों न करे परंतु नारी को वह सदा अपनी दासी ही बनाकर रखना चाहता है। आलोच्य उपन्यास का पात्र ‘मसीता’ इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहता है- “बूटीफुल औरत मर्दों के लिए कचालू-मटर की चाट होती है।”¹⁷ उपन्यास की एक अन्य स्त्री पात्र ‘निर्गुनिया’ जो नारी पीड़ा के साथ-साथ दलित वर्ग की पीड़ा से त्रस्त है। पुरुष जाति से पीड़ित होकर ही वह ब्राह्मणी से मेहतरानी बनती है। अपने जीवन के यथार्थ को स्पष्ट करते हुए वह कहती है- “दुनिया में दो पुराने से पुराने गुलाम हैं- एक भंगी और दूसरी औरत। जब तक यह गुलाम हैं आपकी आज्ञादी रूपये में पूरे सौ के सौ नये पैसे भर झूठी है।”¹⁸ आगे वह कहती है- “औरत हर तरह से मरद जाति की दबोच में है। जब चाहता है गला सहलाता है और जब चाहता है उसे घोंट भी देता है। जिसके पास ताकत होती है, वह कमज़ोर के साथ यही करता है। सदा करता आया और सदा करता रहेगा।”¹⁹

वेश्यावृत्ति अत्यन्त पुरानी तथा ज्वलन्त समस्या है। यद्यपि कुछ स्त्रियाँ स्वयं ही इस धंधे में आ जाती हैं परन्तु आर्थिक अभाव इसका प्रमुख उत्तरदायी माना जाता है। कईयों को तो इस व्यवसाय में ज़बरदस्ती लाया जाता है या बहला-फुसलाकर इस दलदल में धकेला जाता है। वेश्यावृत्ति का सबसे प्रमुख कारण गरीबी है। निर्धनता के कारण जब स्त्रियाँ पेट की आग को बुझाने में असमर्थ रहती हैं तो उनके पास यह एकमात्र विकल्प रह जाता है। अमृतलाल नागर ने **भूख** उपन्यास में आर्थिक विषमताओं से उत्पन्न इस समस्या का चित्रण किया है। जहाँ शीबू नामक पात्र अपनी पत्नी को संपत्ति मानता है। वह मुट्टी भर चावल के लिए अपनी पत्नी को बेच देता है। उसका मानना है- “ये मेरी वस्तु है, इसे मैं बेचूंगा, मुझे भूख लगी है, भूख। ला चावल ला”²⁰ नागर जी ने न केवल विवश स्त्रियों की कुंठा तथा लाचारी को रेखांकित किया है अपितु समाज में व्याप्त उन स्वार्थी तथा क्रूर व्यक्तियों को भी अपने उपन्यास में बेनकाब किया है जो स्त्रियों की इस दयनीय दशा को अवसर मानकर उनका शोषण करते हैं। मोनाई के पास जब गाँव के व्यक्ति भुखमरी और निर्धनता से ग्रस्त होकर अपनी बहु-

बेटियों को बेचने के लिए विवश होते हैं तो वह धर्म-संगत तर्क देने लगता है“ -यों भूखी मर रही है बेचारी वैसे काम से कम से कम खाने-पहनने को तो मिलेगा | भगवान् जी ने अगर इस व्यापार में अच्छे पैसे बनवा दिए तो आगे चलकर एक-एक अनाथालय और आश्रम भी खुलवा दूँगा | यही तो धर्म की महिमा है ”²¹

बूँद और समुद्र उपन्यास में भी आर्थिक अभावों से जूझती नारी वेश्यावृत्ति के लिए विवश हो जाती है | उपन्यास में चित्रित ‘ महिला सेवा मंडल ’में फैले व्यभिचार के कारण भी नारियों की आर्थिक विपन्नता को दिखाया गया है | वास्तव में लेखक का मानना है कि जब तक स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वावलम्बी नहीं होती ; तब तक नारियों का शोषण होता रहेगा तथा वेश्यावृत्ति बढ़ती रहेगी | उपन्यास की प्रधान स्त्री पात्र वनकन्या कहती है“ -भाभी का अपराध यही है कि वे औरत हैं और इकनामिकली फ्री नहीं है ”²² ‘ महिला सेवा मंडल ’ में भी आर्थिक अभावों से जूझती स्त्रियाँ आती हैं | यथा“ -मंडल में कम आमदनी वाले मध्यवर्ग की वे युवतियाँ आती हैं जिनकी चाहत के सपने जमाने के प्रभाव से रियासत भरे होते हैं | मैके में सोचती है कि पति के पैसे से ऐश करेंगी मगर आमतौर पर ये नसीब सबको नहीं मिलता | अधिकतर युवतियाँ अपने पतियों की आर्थिक सीमाओं से बंध कर त्रस्त रहा करती हैं”²³ इस महिला सेवा मंडल की वास्तविकता को स्पष्ट करते हुए लेखक लिखते हैं“ -महिला सेवा मंडल के भवन के अंदर मंत्री ,कार्यकारणी के सदस्यों ,उनके मित्रों और पुलिस वालों के मनोरंजन के लिए व्यभिचार का अड्डा चलता है ”²⁴ मंडल की कार्य संचालक धनवती देवी, वैद्या सज्जन को मंडल में भर्ती हुई अनेक स्त्रियों के संबंध में बताती है तथा उनकी निर्धनता का वर्णन करते हुए कहने लगती है“ -कई बेचारियों की तो रोटी यहाँ से चलती है | हम लोग बाइज्जत तन-मन-धन की भूख मिटाते हैं | मैं तो कहती हूँ यह बड़ा पुन्न का काम है ”²⁵

उपन्यास में एक अन्य स्थल पर जब तवायफें चुनाव के समय वोट डालने आती है तो उनसे पूछा गया-

“बाप का नाम ?

जवाब मिला -रूपया !

फिर पूछा गया -पति का नाम ?

जवाब मिला -रूपया ”!²⁶

निष्कर्षतः अमृतलाल नागर ने अपने विभिन्न उपन्यासों में पूंजीपतियों द्वारा निर्धन तथा निर्बल व्यक्तियों के शोषण का चित्रण किया है | नागर जी मार्क्सवादी साम्यवाद से प्रभावित है अतः वह आर्थिक असमानता का विरोध करते हैं तथा उसके घातक परिणामों से पाठक को सचेत किया है | अमृतलाल नागर ने अपने अधिकांश उपन्यासों में बेरोजगारी जैसी विकट समस्या का चित्रण करते हुए निर्धनता को सभी बुराइयों की जड़ माना है

क्योंकि इसके कारण ही अशिक्षा , बेरोजगारी , चोरी , डकैती तथा अपराध बढ़ जाते हैं | इस निर्धनता के कारण तथा आर्थिक अभाव से पीड़ित स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति के लिए विवश होती दिखाई गई हैं |

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. काजल, (डॉ.) अजमेर सिंह. उपन्यासकार राजेन्द्र यादव : समाजशास्त्री अध्ययन, पृ. 227
2. अमृतलाल नागर. भूख (महाकाल). पृ. 212
3. वही. पृ. 156
4. वही. पृ. 129
5. वही. पृ. 186
6. वही. पृ. 150-51
7. वही. पृ. 150-51
8. अमृतलाल नागर. बूंद और समुद्र. पृ. 143
9. वही. पृ. 247
10. वही. पृ. 247
11. वही. पृ. 63
12. वही. पृ. 307
13. वही. पृ. 307
14. वही. पृ. 307
15. वही. पृ. 307
16. अमृतलाल नागर. नाच्यौ बहुत गोपाल. पृ. 229
17. वही. पृ. 167
18. वही. पृ. 343
19. वही. पृ. 271
20. अमृतलाल नागर. भूख. पृ. 242
21. वही. पृ. 167
22. अमृतलाल नागर. बूंद और समुद्र. पृ. 56
23. वही. पृ. 532
24. अमृतलाल नागर. बूंद और समुद्र. पृ. 307
25. वही. पृ. 315
26. वही. पृ. 254-255